हिन्दू सामाजिक ढांचा एवं दलित

डॉ. जगमोहन सिंह वर्मा

प्राचीन भारत के हमारे वेदों, उपनिषदों, पुराणों, महाकाव्यों, स्मृतियों इत्यादि में हिंदू सामाजिक ढांचे या सामाजिक संरचना का वर्णन मिलता है। रामायण के रचनाकार आदि कवि महर्षि वाल्मीकि, सुखसागर के रचयिता सूरदास, मेघदूत, शकुंतला, कुमारसंभव के रचनाकार महाकवि कालिदास, महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास, राजनीति की कूटनीति का महत्व बढ़ाने वाले चाणक्य के श्लोक, सोलहवीं शताब्दी में रामचरित मानस के लेखक गोस्वामी तुलसी दास आदि अनेकों ने समय-समय पर अपनी विचारधाराओं तथा तत्कालिक भारत के सामाजिक ढांचे का वर्णन किया है। भारत के सामाजिक ढांचे का उद्बोध सबसे ज्यादा मनु की मनुस्मृति में किया गया है। अतः इस लेख में मनुस्मृति द्वारा प्रतिपादित सामाजिक ढांचे तथा उसमें दलितों की स्थिति पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं। भारत में हिंदू संस्कृति के द्वारा देश के लोगों को हजारों जातियों में बांटकर उन्हें परस्पर छुआ-छूत और ऊंच-नीच में विभक्त कर पूरे समाज को विषमतापरक बना दिया है जिसमें मुट्ठी भर लोग बिना कमाए शेष नब्बे प्रतिशत कमजोर जनता का शोषण करने के लिए मुक्त कर दिए गए हैं। इसके कारण कमाने वाले निराश्रित और दरिद्र हो गए जिन्हें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग के अनेक नामों से जाना जाता है। वर्तमान समय में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति इत्यादि को दलित नाम से भी संबोधित किया जाने लगा है जो वर्णव्यवस्था के शूद्र

तथा अन्त्यज के सम्मिश्रण से निर्मित है। मनुस्मृति के सामाजिक ढांचे एवं दलितों की स्थिति पर विचार करते समय प्रसिद्ध हिंदू विचारक मनु की खोज आवश्यक है क्योंकि प्राचीन भारतीय वाङमय में अनेक मनुओं का उल्लेख मिलता है।

प्राचीन भारतीय वाङमय में जिन चौदह मनुओं के नाम का उल्लेख मिलता है वे नाम स्वायंभव, स्वारोचित, औत्ताभि, तामत, रैवत, चक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षतावर्णि, ब्रह्मतावर्णि, धर्मसावर्णि, रूद्रसावर्णि, रौच्यसावर्णि तथा इंद्रसावर्णि हैं। इन मनुओं में वैवस्वत मनु वास्तव में मनुस्मृति के प्रणेता हैं। ऋग्वेद के शतपथ ब्राह्मण में वर्णित मत्र के समान मनुस्मृति के प्रथम अध्याय के श्लोक ३१ में चातुर्वर्णी व्यवस्था का प्रतिपादन किया गया है जो निम्नलिखित है–

लोकानां तु विवृद्धयर्थं मुखबाहूरूपादतः।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्॥

अर्थात् संसार की वृद्धि के लिए ब्रह्मा ने सृष्टि को बढ़ाने के लिए अपने मुख, बाहु, जंघा और चरण से क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की उत्पत्ति की। इनमें ब्राह्मणों को सर्वश्रेष्ठ और शेष लोगों को क्रमशः नीच बताया गया है।

मनुस्मृति ने मानव समूह को चार उच्च और निम्न हिस्सों में विभक्त किया जो क्रम से ऊपर से नीचे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के रूप में हैं तथा वर्णसंकर के आधार पर अनेक जातियों तथा उपजातियों में मानव समूह को विभक्त किया गया है। स्त्री को मनु ने सबसे नीच शूद्र के बराबर माना है और सामाजिक ढांचे में स्पष्ट व्यवस्था दी कि स्त्री और शूद्र को कोई संस्कार करने का अधिकार नहीं है। भारतीय हिंदू सामाजिक ढांचे में नारी या तो नीच मानी गई है या कभी-कभी पूजा की वस्तु मान ली गई है। परंतु यह दोनों दृष्टिकोण एक प्रकार की विकृतियां हैं। स्त्रियां न तो नीच हैं और न तो पूजा की वस्तु हैं, बल्कि वैसी ही मानवी हैं जैसे कि पुरुष होते हैं। स्त्री और शूद्र को मनु ने विद्या से वंचित कर दिया। समाज में शूद्र व स्त्रियां अपढ़ रहने के कारण हिंदू सामाजिक ढांचे के अंतर्गत बहुसंख्यक लोग अज्ञानी रह गए। अज्ञानता के कारण मनु का सामाजिक ढांचा ऐसे पतनावस्था में पहुंच गया कि जिसमें हर विदेशी हमलावर भारत पर सफलतापूर्वक हमला कर सका। जिसने देश को लूटना चाहा वह लूट कर ले गया और जिसने राज करना चाहा वह राज्य करने लगा।

जो लोग कर्म के आधार पर मनु द्वारा वर्णव्यवस्था को उचित ठहराते हैं वे यह भूल जाते हैं कि दक्षता या कुशलता किसी वर्ण या जाति से जुड़ी न होकर व्यक्ति की पूंजी है। भारत में इस समय हजारों वर्ष पहले उद्भूत वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष तीव्र होने के कारण गंभीर चिंतन के बजाय ब्राह्मणवादी या हिंदुत्ववादी या मनुवादी शक्तियां अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए सिर्फ बहानों की तलाश कर रही हैं तथा कुतर्कों की खोज कर रही हैं। वर्णव्यवस्था को कर्म पर आधारित करके इसके औचित्य को सिद्ध करना चाहती हैं। ये शक्तियां यह भी प्रचारित करती हैं कि किसी न किसी प्रकार का श्रम विभाजन प्रत्येक समाज में होता है, चाहे वह वर्णव्यवस्था के आश्रित हो या अन्य आधारों पर हो। परंतु ये शक्तियां इस तथ्य को स्पष्ट नहीं कर पाती हैं कि वर्णव्यवस्था के अंतर्गत गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्ण तथा श्रम का विभाजन संपूर्ण मानव समाज के सदस्यों के लिए किया गया है तो भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में वर्णव्यवस्था के ही नाम से कोई व्यवस्था क्यों नहीं पाई जाती है? यह व्यक्ति एक दिन में अनेक प्रकार के कर्म करता है तो क्या वह एक दिन में कई वर्ण बदलता है? परंतु ऐसा नहीं है। भारत के वर्तमान समाज में तो ब्राह्मण जूता बनाने का कर्म करते हुए भी चमार नहीं माना जाता बल्कि वह ब्राह्मण ही माना जाता है तथा इसी तरह चमार अध्यापन का कर्म करते हुए भी ब्राह्मण नहीं माना जाता बल्कि वह चमार ही माना जाता है।

मनुवादी सामाजिक ढांचे के समर्थक ब्राह्मणवाद या हिंदूवाद शब्दों के तात्पर्य या अर्थ को लेकर भी आधुनिक भारतीय समाज को भ्रम में डालने की कोशिश कर रहे हैं। उनका कहना है कि यदि ब्राह्मणवाद बुरा है तो दलितवाद, अमियवाद या इसी प्रकार अन्य कोई जाति-उपजाति पर आधारित वाद भी समाज में एक सृजनात्मक एकरूपता नहीं ला सकता है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जब लोकतंत्र की व्यवस्था ने ब्राह्मणवाद, पुरोहितवाद या हिंदूवाद या मनुवाद पर निर्णायक प्रहार करना आरंभ कर दिया तो उन्हें सृजनात्मक एकरूपता, मानवता और सबको साथ लेकर

समरसतावाद के आधार पर भारत को मजबूत राष्ट्र बनाने की चिंता तीव्र हो गई है। 'श्रम और भूख' या 'भूख और श्रम' के अतिरिक्त ब्राह्मणवाद ने दलितों और पिछड़ों में और किसी प्रकार की जरूरत को उभरने नहीं दिया तथा इनकी जीवन यात्रा को 'भूख' और 'श्रम' तक ही सीमित कर दिया गया तो उस ढाई हजार वर्ष की लंबी परंपरा में मनुवादियों की संवेदनशीलता जागृत नहीं हुई। दलितों के अपने 'अस्तित्व' तथा 'अस्मिता' के प्रति सजग होने के कारण सवर्णों को समाज की चिंता अधिक हो गई है। सवर्ण या उच्च वर्ण अपने को ऐसे अनभिज्ञ दिखा रहे है जैसे वह धर्म शास्त्रों में वर्णित ब्राह्मणवाद की परिभाषा ही नहीं जानते है। ब्राह्मणवाद का तात्पर्य किसी ब्राह्मण व्यक्ति या जाति से नहीं है बल्कि भाग्यवाद पर आधारित वर्णव्यवस्था का नाम ब्राह्मणवाद है जो ब्राह्मणग्रंथ शतपथ ब्राह्मण से निकलने के कारण यह ब्राह्मणवाद कहलाता है। यह मनुस्मृति समर्थित है। भारतीय इतिहासकारों ने अपनी इतिहास की पुस्तकों में ब्राह्मणवाद शब्द का ही प्रयोग किया है।

वास्तव में मनुस्मृति के वर्णन के अनुरूप ही सामाजिक ढांचा किसी न किसी रूप में आज भी भारत के ग्रामीण और आंचलिक जीवन में पाया जाता है। भारत का समाज विशेष रूप से ग्रामीण समाज का जीवन मनुस्मृति के अनुरूप सोपानात्मक अथवा सीढ़ीनुमा है जिसे समाप्त करने के लिए संघर्ष हो रहे हैं। ऐसे संघर्ष पहले भी हुए हैं किंतु इन संघर्षों में जड़ या मूल पर प्रहार नहीं किए गए। ज्योतिबा फूले, छत्रपति शाहूजी महाराज, नारायण गुरु, पेरियार रामास्वामी नायकर, डा. भीमरावजी अंबेडकर इत्यादि ने हिंदू सामाजिक व्यवस्था जो अन्याय पर आधारित है उसकी जड़ पर प्रहार किया है। सीढ़ीनुमा सामाजिक ढांचे में पहली सीढ़ी पर बैठे लोगों का संघर्ष आमतौर पर दूसरी सीढ़ी पर बैठे लोगों के साथ रहता है बजाय तीसरी और चौथी सीढ़ी पर बैठे लोगों के साथ जिसका कारण संलग्नता होती है। इसीलिए दलितों और पिछड़ी जातियों के साथ काफी टकराव रहा है जिसका सहारा ब्राह्मणवाद या मनुवाद अपने को बचाने के लिए लेता रहा है। यदि इन दो सीढ़ियों पर बैठे लोगों में मेल और सहयोग होता है तो यह सीढ़ीनुमा सामाजिक ढांचा समतल हो सकता है जिसमें समता तथा बंधुत्व का बाहुल्य हो। मनुवादी चिंतक इन दोनों सीढ़ियों पर बैठे लोगों में पाए जाने वाले वर्तमान समय के इन जातीय संघर्षों में जनतांत्रिक सार को न देखकर इसे सिर्फ एक नए जातिवाद के उभार के रूप में देखकर वास्तव में जातिवादी सामाजिक ढांचे पर प्रहार को ही जातिवाद के रूप में प्रस्तुत करने के पाखंड की रचना कर रहे हैं। मनुवाद या ब्राह्मणवाद इन संघर्षों को सवर्ण जातिवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न अवर्ण जातिवाद की संज्ञा दे रहा है। मेरी राय में चाहे सवर्ण जातिवाद हो या अवर्ण जातिवाद, दोनों का समाप्त होना मानवतावाद तथा भारतीय संविधान के अनुरूप भारतीय समाज की स्थापना के लिए आवश्यक है। हिंदू सामाजिक ढांचे में मानव समता के स्थान पर मानव विषमता और वैज्ञानिक चिंतन के स्थान पर अंधविश्वास को ऐसे तरीके से प्रतिपादित किया गया है कि जिससे दलितों, निराश्रित व दरिद्र जनता का शोषण होता रहे। दलितों का उत्थान तभी संभव है जब विषमतामूलक हिंदू सामाजिक ढांचे की जड़ भाग्यवाद पर आधारित वर्णव्यवस्था और जातिव्यवस्था को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया जाए। यह कार्य तभी संभव होगा जब समस्त राष्ट्र अपनी कमजोरियों को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करके अंतर्मंथन करने का प्रयास करें और सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्रांति के लिए प्रतिबद्धता प्रदर्शित करें।
